साक्षात्कार है; इसलिए यह भी भगवान् का स्वरूप है। यह मन्त्र उत्तम साधकों के लिए है और इसकी जप-सिद्धि से विशुद्ध सत्त्व में स्थिति हो जाती है। अतः इस मन्त्र का जप करने के लिए सत्त्वगुण में स्थित होकर उपयुक्त सद्गुणों से युक्त हो जाना चाहिए। गायत्री मन्त्र की वैदिक संस्कृति में वस्तुतः बड़ी महिमा है। इसे ब्रह्म का नाद-अवतार माना जाता है। ब्रह्मा इसके गुरु हैं और उन्हीं की शिष्यपरम्परा में यह प्राप्त होता है।

मार्गशीर्ष मास अन्य सभी मासों से श्रेष्ठ है। इस समय खेतों से अन्न इकट्ठा किया जाता है और जनता आनन्दित रहती है। वसन्त ऋतु सम्पूर्ण विश्व में लोकप्रिय है ही, क्योंकि इस समय न अधिक उष्णता होती है और न ही अधिक शीत रहता है तथा कुसुम और वृक्ष मुकुलित होते हैं, फलते-फूलते हैं। वसन्त में श्रीकृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित बहुत से महोत्सव भी आते हैं। सबसे अधिक आनन्दमयी ऋतु होने के नाते वसन्त श्रीकृष्ण का रूप है।

**द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्।**
**जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्।।३६।।**

**द्यूतम्**=जुआ; **छलयताम्**=सब छल करने वालों में; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **तेजः**=प्रभाव; **तेजस्विनाम्**=प्रभावशाली पुरुषों का; **अहम्**=मैं (हूँ); **जयः**=विजय; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **व्यवसायः**=साहस; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **सत्त्वम्**=बल; **सत्त्ववताम्**=बलवानों का; **अहम्**=मैं (हूँ)।

### अनुवाद

मैं छल करने वालों में जुआ हूँ और प्रभावशालियों का प्रभाव हूँ। मैं विजय हूँ, मैं साहस हूँ और मैं ही बलवानों का बल हूँ।।३६।।

### तात्पर्य

संसार भर में भाँति-भाँति के छल करने वाले हैं। द्युतकर्म इन सब छल साधनों का मुकुटमणि है; इसलिए वह भी श्रीकृष्ण की विभूति है। परात्पर होने के कारण श्रीकृष्ण किसी भी मनुष्य से बढ़कर छल कर सकते हैं। यदि श्रीकृष्ण किसी को छलना चाहें तो उन्हें कोई भी नहीं हरा सकता। स्पष्ट रूप से श्रीकृष्ण की महानता एकांगी न होकर सर्वांगीण है।

विजेताओं में श्रीकृष्ण मूर्तिमान विजय हैं; प्रभावशाली पुरुषों के प्रभाव हैं; उद्यमी उद्योगपतियों में सर्वाधिक उद्यमी हैं; साहसिकों में परम साहसी हैं और बलवानों में परम बलशाली हैं। जब श्रीकृष्ण पृथ्वी पर प्रकट थे, तो कोई भी बल में उनका पार नहीं पा सका। यहाँ तक कि बाल्यकाल में उन्होंने गोवर्धन पर्वत को खेल-खेल में ही धारण कर लिया था। श्रीकृष्ण छल करने में अतुलनीय हैं, तेज में अतुलनीय हैं, जय और साहस में अतुलनीय हैं तथा बल में भी अतुलनीय हैं।

**वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः।**
**मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः।।३७।।**